



सतना जिले के ग्रामीण एवं नगरीय महाविद्यालयों से चयनित छात्र-छात्राओं के परिवार के सदस्यों द्वारा उनके खेल की अभिरूचि को बढ़ाने में सहयोग करने से सम्बद्ध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनिल सिंह<sup>1</sup>, डॉ. भरत कुमार विश्वकर्मा<sup>2</sup>  
<sup>1</sup>शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लॉग लर्निंग विभाग,  
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)  
<sup>2</sup>विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग  
श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, जिला रीवा (म.प्र.)

#### सारांश –

खेल छात्र-छात्राओं की स्वाभाविक क्रिया है। भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के छात्र-छात्रा विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल छात्र-छात्राओं के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से छात्र-छात्राओं का शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है किन्तु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवं क्रियाकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया है। अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें। खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है।



**मुख्य शब्द –** सतना जिला, ग्रामीण, नगरीय, छात्र-छात्राओं एवं खेल की अभिरूचि ।

#### प्रस्तावना –

जीवन में खेल मानव के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक एवं भावनात्मक विकास की दृष्टि से आवश्यक कार्य है। दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षाशास्त्रीय, मानसशास्त्रीय तथा मनोरंजनात्मक पक्ष के ज्ञाता एवं विद्वान खेलों को इतना महत्व देते हैं कि इनकी सम्प्रेरण के लिए उन्होंने अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। वे सिद्धान्त शारीरिक वृद्धि, शक्ति संवर्धन, अतिरिक्त ऊर्जा, सामाजिक आवश्यकता आत्मप्रगटन, मनोरंजन आदि के नामों से जाने जाते हैं। खेल सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए समान महत्व रखते हैं। खेलों का चुनाव व्यक्ति विशेष की रुचि एवं समूह की रुचियों के आधार पर किया जाता है। मानव जीवन में खेल अत्यन्त महत्वपूर्ण क्रिया है। विगत कुछ वर्षों से व्यक्ति में अपनी शारीरिक तंदुरुस्ती और चुस्ती के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। इसके परिणामस्वरूप शारीरिक शिक्षा की अवधारणा का विकास हुआ है।

शारीरिक शिक्षा ने आज के युग को विशेष सार्थकता, अद्वितीय जरूरतों को पूरा करना कि “भारत को आज भगवत गीता की नही बल्कि फुटबाल के मैदान की जरूरत है।” शारीरिक शिक्षा न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी महान उपयोगिता है। शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व पर बल देते हुए रोशयू ने कहा है “यह शरीर का ठोस ही है जो मन का सही और निश्चित संचालन करता है”, सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन भी शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित था। उसने कहा था कि ‘देश के युवा का शारीरिक

कल्याण राज्य के मुख्य सरोकारों में से एक होना चाहिए और जीवन की इस अवधि में शारीरिक कल्याण के सामान्य नियमों से भागने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।" शारीरिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो बालक को सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु विभिन्न क्रियाओं द्वारा शरीर, मन तथा आत्मा को पूर्णता की ओर बढ़ाती है।" मनुष्य के विकास में खेल-कूद एवं शिक्षा और संस्कारों की प्रमुख भूमिका है। शिक्षा एवं खेल-कूद का उद्देश्य जहाँ एक ओर बालक के मस्तिष्क में ज्ञानदीप प्रज्वलित करना है। वहीं दूसरी ओर बालक के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास करना भी है। खेल व शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों जैसे-ज्ञानार्जन, मानसिक विकास, जीविकोपार्जन, शारीरिक शिक्षा सांस्कृतिक विकास, चरित्र निर्माण, परिस्थिति अनुकूलन, व्यक्तित्व विकास आदि को स्वस्थ शरीर के मस्तिष्क के बिना प्राप्त किया जाना प्रायः असम्भव है। स्वस्थ शरीर के विकास में शारीरिक शिक्षा की अहम् भूमिका है। हमारे धर्मग्रन्थों में भी लिखा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है और स्वस्थ मन होने पर ही विधिवत शिक्षा ली जा सकती है। चाहे वह शिक्षा किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो।

### विश्लेषण –

ग्रामीण एवं नगरीय महाविद्यालयों से चयनित छात्र-छात्राओं के परिवार के सदस्यों द्वारा उनके खेल की अभिरुचि को बढ़ाने में सहयोग करने से सम्बद्ध प्राथमिक तथ्यों को सर्वेक्षण के दौरान साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित कर सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जो इस प्रकार है

### सारणी क्रमांक 1 परिवार के सदस्यों का खेल की अभिरुचि को बढ़ाने में सहयोग

क्र.	वर्गीकरण का स्वरूप	ग्रामीण महाविद्यालयों के छात्रों का विवरण		नगरीय महाविद्यालयों के छात्रों का विवरण	
		छात्रों की संख्या	प्रतिशत	छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अच्छा	109	43.60	113	45.00
2	सामान्य अच्छा	87	34.80	76	30.40
3	अच्छा	46	18.40	44	17.60
4	कुछ कह नहीं सकते	8	3.2	17	6.80
	कुल योग	250	100	250	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से सुस्पष्ट होता है कि यह परिवार के सदस्यों का खेल की अभिरुचि को बढ़ाने में सहयोग से सम्बद्ध है। शोधकर्ता द्वारा ग्रामीण महाविद्यालयों से चयनित कुल 250 छात्रों में 109 छात्रों ने बहुत अच्छा, 87 छात्रों ने सामान्य अच्छा, 46 छात्रों ने अच्छा और 8 छात्रों ने बताया कुछ कह नहीं सकते, जिनके प्रतिशत क्रमशः 43.60, 34.80, 18.40 एवं 3.2 है। इसी प्रकार जिले के नगरीय महाविद्यालयों से चयन किये गये कुल 250 छात्रों में 113 छात्रों ने बताया कि बहुत अच्छा, 76 छात्रों ने सामान्य अच्छा, 44 छात्रों ने अच्छा तथा 17 छात्रों ने कुछ कह नहीं सकते बताया जिनके प्रतिशत क्रमशः 45.20, 30.40, 17.60 एवं 6.80 है।

### निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सतना जिले के ग्रामीण एवं नगरीय महाविद्यालयों से चयन किये गये सर्वाधिक छात्रों ने स्वीकार किया है कि परिवार के सदस्यों का खेल की अभिरुचि को बढ़ाने में बहुत अच्छा सहयोग मिल रहा है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शामिल होने और प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाना आवश्यक है। खिलाड़ी छात्रों को घरों से बाहर लाना, उन्हें सुरक्षित माहौल देना, शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी की अनुमति प्रदान करना, साथ ही उच्च स्तरीय कोचिंग एवं सर्वसुविधा युक्त मैदान एवं उपकरण उपलब्ध करवाना, यह सरकार एवं समाज दोनों के सामूहिक प्रयास से ही संभव है। ताकि खेल के प्रति युवा वर्ग की अभिरुचि को बढ़ाया जा सके।

**संदर्भ –**

1. सिंह, अजमेर – शारीरिक शिक्षा एवं ओलम्पिक अभियान, कल्याण पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 10
2. शर्मा, एन.पी. – शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, शैल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, संस्करण 2003, पृष्ठ 6
3. शर्मा, ए. एण्ड कुमार, एस. – शारीरिक शिक्षा विश्व कोश, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 5
4. शर्मा, ए. एण्ड कुमार, एस. – शारीरिक शिक्षा विश्व कोश, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 5